

रांगेय राघव के कथा साहित्य में भू काव्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में स्थान संसाधन और हाशिए का मनोविज्ञान

चन्द्रभान मीना

सह आचार्य, हिन्दी विभाग, राज ऋषि राजकीय महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र रांगेय राघव के कथा-साहित्य में स्थान, भूगोल, संसाधन और सामाजिक संबंधों के पारस्परिक संबंध का अध्ययन करता है। विश्लेषण के लिए मुख्यतः उपन्यास कब तक पुकारूँ तथा कहानी 'गदल' को केंद्र में रखा गया है। लेख का प्रमुख प्रश्न यह है कि साहित्यिक 'स्थान' किस प्रकार केवल भौगोलिक पृष्ठभूमि न रहकर पात्रों की आजीविका, सामाजिक प्रतिष्ठा, निवास, गतिशीलता, पारिवारिक संबंध और आत्मबोध को प्रभावित करता है। अध्ययन में 'भू-काव्यशास्त्र एवं जियोपोएटिक्स', हेनरी लेफेब्वर की स्थान-उत्पादन की अवधारणा और पारिस्थितिक स्त्रीवाद को आलोचनात्मक उपकरण के रूप में उपयोग किया गया है। इन सिद्धांतों को रांगेय राघव की घोषित वैचारिकी मानने के बजाय समकालीन पुनर्पाठ की पद्धति के रूप में ग्रहण किया गया है। कब तक पुकारूँ में करनट समुदाय की अस्थिर सामाजिक स्थिति, निवास और संसाधनों से दूरी तथा सुखराम की पहचान-संबंधी आकांक्षा को स्थानिक असुरक्षा के साथ पढ़ा गया है। 'गदल' में घर, परिवार, देह, मर्यादा और स्त्री की इच्छा के बीच का तनाव यह दिखाता है कि स्थान निजी होने के साथ-साथ सामाजिक नियंत्रण का माध्यम भी हो सकता है। लेख का निष्कर्ष यह है कि रांगेय राघव के कथा-संसार में भूगोल और सामाजिक सत्ता का संबंध परस्पर निर्मित है; फिर भी पात्र अपने परिवेश के निष्क्रिय उत्पाद नहीं हैं, बल्कि वे संघर्ष, निर्णय और प्रतिरोध के माध्यम से स्थान के अर्थ को बदलने का प्रयत्न करते हैं। इस प्रकार रांगेय राघव का साहित्य स्थानिकता, सामाजिक असमानता और हाशिए के अनुभव को एक साथ पढ़ने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

मूल शब्द: रांगेय राघव, भू-काव्यशास्त्र, जियोपोएटिक्स, स्थानिकता, स्थान-उत्पादन, कब तक पुकारूँ, गदल, करनट समुदाय

प्रस्तावना

साहित्य में 'स्थान' को केवल किसी गाँव, कस्बे, शहर, नदी या प्रदेश के नाम से समझना पर्याप्त नहीं है। किसी रचना का स्थान वहाँ रहने वाले लोगों के श्रम, स्मृतियों, संबंधों, संसाधनों, सामाजिक नियमों और सांस्कृतिक व्यवहारों से मिलकर बनता है। इसलिए साहित्य और भूगोल का संबंध प्रकृति-वर्णन से आगे जाता है। भूमि पर अधिकार, निवास की स्थिरता, जल और अन्य संसाधनों तक पहुँच, आवागमन की सुविधा तथा सामाजिक प्रतिष्ठा किसी स्थान के अर्थ को निर्मित करती हैं। इस प्रकार 'स्थान' एक भौतिक तथ्य होने के साथ-साथ सामाजिक अनुभव भी है। रांगेय राघव का कथा-साहित्य इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि उसमें ग्रामीण तथा अर्द्धग्रामीण समाज के विविध स्तर दिखाई देते हैं। उनके लेखन में ऐतिहासिक, सामाजिक और लोकजीवन संबंधी संसार के साथ वे समुदाय भी उपस्थित हैं जिनकी सामाजिक स्थिति स्थिर और सुरक्षित नहीं है। कब तक पुकारूँ विशेष रूप से करनट समुदाय के जीवन-संघर्ष को कथा का केंद्रीय विषय बनाता है। उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री भी इस उपन्यास को राजस्थान और ब्रज क्षेत्र की सीमा से जुड़े ग्रामीण संसार तथा करनट समुदाय के संघर्ष से जोड़ती है।

'गदल' में सामाजिक स्थान का प्रश्न दूसरे स्तर पर उभरता है। यहाँ घर, परिवार, जातीय-सामुदायिक मर्यादा और स्त्री की इच्छा आपस में जुड़ते हैं। कहानी के पाठ में संवाद और घटनाएँ गदल के आत्मसम्मान, पारिवारिक तनाव तथा सामाजिक नियंत्रण के बीच उसके निर्णयों को सामने लाती हैं। इसलिए दोनों रचनाओं को साथ पढ़ने पर यह देखा जा सकता है कि रांगेय राघव के यहाँ स्थान केवल बाहरी दृश्य नहीं बल्कि सत्ता, पहचान और मनोविज्ञान से जुड़ा हुआ अनुभव है।

यह अध्ययन रांगेय राघव की रचनाओं पर आधुनिक सिद्धांतों का यांत्रिक आरोपण करने के बजाय, उन्हें समकालीन विमर्शों के आलोक में विश्लेषित करता है। 'भू-काव्यशास्त्र', 'स्थान का सामाजिक उत्पादन' और 'पारिस्थितिक स्त्रीवाद' यहाँ समकालीन आलोचनात्मक उपकरणों के रूप में प्रयुक्त हैं। इस परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन पूछता है कि रांगेय राघव के कथा-पात्र अपने

भौतिक परिवेश और सामाजिक संरचनाओं को किस प्रकार अनुभव करते हैं और उनके जीवन में स्थान किस प्रकार अर्थ ग्रहण करता है।

अध्ययन के उद्देश्य और शोध-प्रश्न

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं:

- रांगेय राघव के कथा-साहित्य में स्थान और सामाजिक संबंधों के अंतर्संबंध को समझना।
- कब तक पुकारूँ में करनट समुदाय की निवास-अस्थिरता, संसाधन-प्रवेश और सामाजिक बहिष्कार को स्थानिक दृष्टि से पढ़ना।
- 'गदल' में घर, परिवार, स्त्री की इच्छा और सामाजिक नियंत्रण के संबंध की जाँच करना।
- भू-काव्यशास्त्र तथा स्थान-उत्पादन की अवधारणाओं की सहायता से पात्रों के मनोवैज्ञानिक अनुभव का विश्लेषण करना।
- यह स्पष्ट करना कि स्थानिक विश्लेषण को भूगोल-आधारित नियतिवाद से किस प्रकार अलग रखा जा सकता

इन उद्देश्यों के आधार पर अध्ययन के मुख्य प्रश्न हैं: (क) रांगेय राघव के यहाँ स्थान सामाजिक अर्थ कैसे ग्रहण करता है? (ख) अस्थिर निवास और संसाधनों से दूरी हाशिए के समुदायों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है? (ग) क्या घर जैसे निजी प्रतीत होने वाले स्थान सामाजिक नियंत्रण से भी निर्मित होते हैं? और (घ) इन संबंधों को समझते समय आधुनिक भू-काव्यशास्त्रीय तथा पारिस्थितिक स्त्रीवादी सिद्धांतों की क्या उपयोगिता और क्या सीमाएँ हैं?

शोध-पद्धति और प्राथमिक सामग्री

यह अध्ययन गुणात्मक, व्याख्यात्मक और निकट-पाठ (close reading) पर आधारित है। प्राथमिक पाठ के रूप में रांगेय राघव का कब तक पुकारूँ तथा कहानी 'गदल' को लिया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक पाठों के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें प्रत्यक्ष उद्धरणों के स्थान पर उनके निहितार्थों की सैद्धांतिक व्याख्या को प्राथमिकता दी गई है। यह प्रक्रिया शोध-संदर्भ की विश्वसनीयता और साहित्यिक समग्रता के लिए उपयुक्त है।

सैद्धांतिक सामग्री में केनेथ व्हाइट की जियोपोएटिक्स संबंधी कृतियाँ, विशेषतः *The Wanderer and His Charts*, हेनरी लेफ़ेब्वर की *The Production of Space*, मिशेल फ़ूको का *"Of Other Spaces"*, तथा वंदना शिवा की *Staying Alive* शामिल हैं। इन स्रोतों को रांगेय राघव पर सीधे आरोपित सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि व्याख्यात्मक ढाँचे के रूप में ग्रहण किया गया है।

साहित्य समीक्षा एवं शोध-अंतराल

रांगेय राघव के साहित्य पर हिन्दी आलोचना में सामाजिक यथार्थ, इतिहास-बोध, ग्रामीण जीवन, वर्ग-संघर्ष, लोकजीवन और हाशिए के समुदायों जैसे प्रश्नों पर विचार हुआ है। कब तक पुकारूँ पर उपलब्ध आलोचनात्मक अध्ययन इसे करनट समुदाय के जीवन-संघर्ष से जोड़ते हैं। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद खीचड़ का शोध-आलेख उपन्यास को पूर्वी राजस्थान के करनट समुदाय के जीवन और संघर्ष के संदर्भ में पढ़ता है। इसी प्रकार भारत सरकार के केंद्रीय हिन्दी निदेशालय की सामग्री में भी इस उपन्यास को करनट समुदाय और राजस्थान-ब्रज क्षेत्र की सीमा से जुड़े ग्रामीण संसार के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

'गदल' के संबंध में उपलब्ध पाठ कहानी के स्त्री-केंद्रित सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष की ओर संकेत करती है। पारिवारिक तनाव, सम्मान, संबंध और हिंसक टकराव की स्थितियाँ सामने आती हैं। इस प्रकार कहानी को केवल 'स्त्री-वेदना' तक सीमित करने के बजाय सामाजिक स्थान, परिवार और देह पर नियंत्रण के संदर्भ में पढ़ने की संभावना मौजूद है।

फिर भी, भूमि, निवास, संसाधन, सामाजिक प्रतिष्ठा और हाशिए के मनोविज्ञान को एक संयुक्त स्थानिक दृष्टि में पढ़ना एक उपयोगी शोध-दिशा बनती है। उपलब्ध आलोचना के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि इन प्रश्नों को एक ही विश्लेषणात्मक ढाँचे में रखकर पढ़ने की पर्याप्त संभावना अभी भी बनी हुई है।

सैद्धांतिक आधार

भू-काव्यशास्त्र और जियोपोएटिक्स: 'भू-काव्यशास्त्र' का प्रयोग यहाँ जियोपोएटिक्स (Geopoetics) के हिंदी रूपांतरण के रूप में किया गया है। केनेथ व्हाइट के कार्य में भूगोल, पृथ्वी, गति, स्थान और रचनात्मक चेतना के संबंध को साहित्यिक तथा दार्शनिक प्रश्नों से जोड़ा जाता है। रांगेय राघव पर इसका उपयोग करते हुए भू-काव्यशास्त्र को एक ऐसी आलोचनात्मक दृष्टि के रूप में लेना उपयुक्त है जो पूछती है कि मनुष्य किसी स्थान को किस प्रकार अनुभव करता है और साहित्य में स्थान किस प्रकार अर्थवान बनता है।

स्थान का सामाजिक उत्पादन: हेनरी लेफ़ेब्वर की *The Production of Space* स्थान को केवल भौतिक धरातल न मानकर सामाजिक प्रक्रियाओं से निर्मित मानती है। रांगेय राघव के संदर्भ में यह अवधारणा विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि किसी व्यक्ति या समुदाय के लिए 'स्थान' का अनुभव उसके निवास-अधिकार, सामाजिक प्रतिष्ठा, श्रम और संसाधनों तक पहुँच से प्रभावित होता है। अतः एक ही भौगोलिक क्षेत्र विभिन्न सामाजिक समूहों के लिए भिन्न प्रकार का स्थान बन सकता है।

अन्य-स्थल और उसकी सीमा: मिशेल फ़ूको का *"Of Other Spaces"* हेटरोटोपिया और 'अन्य स्थानों' पर विचार करता है^[8]। इस लेख में फ़ूको का उपयोग केवल इस प्रश्न को स्पष्ट करने

के लिए किया गया है कि सामाजिक मानकों की दृष्टि से 'सामान्य' और 'हाशिए' के स्थान किस प्रकार निर्मित होते हैं।

पारिस्थितिक स्त्रीवाद: वंदना शिवा की *Staying A live: Women, Ecology and Development* में स्त्री, प्रकृति, संसाधन और विकास के संबंध का अध्ययन किया गया है। इको-फेमिनिस्ट दृष्टि यहाँ यह पूछने के लिए उपयोगी है कि संसाधन, घरेलू स्थान, श्रम और सामाजिक नियंत्रण में लैंगिक अंतर कैसे काम करते हैं।

राजस्थान-ब्रज का स्थानिक संसार: रांगेय राघव की रचनाओं में राजस्थान और ब्रज क्षेत्र की ग्रामीण दुनिया केवल वर्णनात्मक पृष्ठभूमि नहीं बनती। इस भू-दृश्य में भूमि, जल, पशुपालन, मौसम और खेती जीवन के व्यावहारिक आधार हैं। किंतु इन संसाधनों की उपयोगिता सामाजिक संबंधों से अलग नहीं है। जिसके पास स्थायी निवास, भूमि या सामाजिक सुरक्षा नहीं है, उसके लिए प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता का अर्थ भी अलग हो जाता है। 'परिवेश' और 'सामाजिक संरचना' को दो अलग-अलग परतों के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। शुष्क या कठोर पर्यावरण का अनुभव अपने आप किसी पात्र के व्यवहार को निर्धारित नहीं करता। वह आर्थिक स्थिति, संसाधन-प्रवेश, सामाजिक प्रतिष्ठा और आजीविका की संरचनाओं के साथ मिलकर सामाजिक अनुभव को आकार देता है।

कब तक पुकारूँ: हाशिए का स्थान और करनट समुदाय कब तक पुकारूँ का एक केंद्रीय पक्ष करनट समुदाय का जीवन है। समुदाय की स्थिति को केवल 'अपराध' या सामाजिक विचलन की श्रेणी में पढ़ना उसके सामाजिक संदर्भ को संकुचित कर सकता है। उपन्यास का महत्त्व इस बात में है कि वह समुदाय के जीवन को आर्थिक अस्थिरता, सामाजिक दूरी, निवास और सम्मान के प्रश्नों के साथ प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से 'हाशिया' केवल सामाजिक पहचान नहीं बल्कि एक स्थानिक स्थिति भी बन जाता है।

स्थायी भूमि या सुरक्षित निवास का अभाव व्यक्ति की सामाजिक सुरक्षा को कमजोर कर सकता है। कब तक पुकारूँ में यह अस्थिरता जीवन-निर्वाह से आगे पहचान और आत्मसम्मान के प्रश्न तक पहुँचती है। उपन्यास का नायक सुखराम इस तनाव का जटिल उदाहरण है। उसकी स्थिति सामाजिक स्वीकार्यता की आकांक्षा, आर्थिक असुरक्षा और समुदायगत पहचान के बीच बनती है। उसका मनोविज्ञान स्थानिक अनुभव से जुड़ा है, लेकिन उसके व्यवहार का कारण केवल भूगोल नहीं है।

सामाजिक बहिष्कार और स्थानिक असुरक्षा: किसी व्यक्ति का 'स्थान' केवल वह जगह नहीं है जहाँ वह रहता है; वह यह भी है कि समाज उसे कहाँ स्वीकार करता है। करनट समुदाय के संदर्भ में स्थायी भूमि और सामाजिक प्रतिष्ठा से दूरी व्यक्ति को ऐसे जीवन की ओर धकेल सकती है जिसमें भविष्य की योजना बनाना कठिन हो। यह अस्थिरता मनोवैज्ञानिक स्तर पर भय, असुरक्षा और आत्मसम्मान की समस्या पैदा करती है। यहाँ लेफ़ेब्वर की दृष्टि से देखा जा सकता है कि 'हाशिया' प्राकृतिक नहीं बल्कि सामाजिक रूप से उत्पादित स्थान है।

सुखराम का मनोविज्ञान: सुखराम की पहचान उस सामाजिक दूरी से निर्मित होती है जिसे वह अनुभव करता है। वह जिस सामाजिक सम्मान या स्थायित्व की ओर बढ़ना चाहता है, वह उसकी वर्तमान स्थिति और उसकी आकांक्षा के बीच अंतर को सामने लाता है। फिर भी इस संबंध को भूगोल-आधारित नियतिवाद नहीं बनाना चाहिए। रांगेय राघव के पात्र इसी

जटिलता में जीवित रहते हैं जहाँ निर्णय सामाजिक स्मृति, पारिवारिक संबंध और नैतिक द्वंद्व से भी प्रभावित होते हैं।

‘गदल’: घर, परिवार और स्त्री का सामाजिक स्थान: ‘गदल’ कहानी स्त्री, परिवार और सामाजिक मर्यादा के संबंध को केंद्र में लाती है। गदल को केवल ‘पीड़ित स्त्री’ कहना उसके चरित्र की जटिलता को सीमित कर देगा। उसके निर्णयों में आत्मसम्मान, निजी इच्छा, पारिवारिक स्मृति और सामाजिक मानदंड एक साथ उपस्थित हैं।

यहाँ ‘घर’ को एक महत्वपूर्ण सामाजिक स्थान के रूप में पढ़ा जा सकता है। घर सुरक्षा और अपनत्व का स्थान हो सकता है; किंतु वही स्थान स्त्री के लिए नियंत्रण, अपेक्षा और निगरानी का माध्यम भी बन सकता है। भू-काव्यशास्त्रीय दृष्टि से घर एक lived space है जिसे व्यक्ति स्मृति और भावनात्मक संबंधों के माध्यम से अर्थ देता है।

स्त्री की इच्छा और सामाजिक मर्यादा: ‘गदल’ में स्त्री की स्वतंत्र इच्छा का प्रश्न परिवार की प्रतिष्ठा, विवाह और सामुदायिक स्वीकृति की संरचना से जुड़ा हुआ है। इस कारण स्त्री की देह और उसके निर्णय पर सामाजिक अधिकार स्थापित होता है। इको-फेमिनिस्ट दृष्टि यहाँ एक उपयोगी प्रश्न उपस्थित करती है—संसाधनों, घरेलू श्रम और सामाजिक स्थान पर अधिकार का लैंगिक वितरण किस प्रकार व्यक्ति के विकल्पों को प्रभावित करता है?

भूमि, संसाधन और सत्ता: रांगेय राघव के ग्रामीण संसार में भूमि और संसाधन केवल आर्थिक वस्तुएँ नहीं हैं। वे सामाजिक प्रतिष्ठा, आत्मसम्मान और निर्णय-क्षमता से जुड़े होते हैं। यह संबंध कब तक पुकारूँ में करनट समुदाय की स्थिति में स्पष्ट रूप से पढ़ा जा सकता है। समुदाय के पास स्थायी संसाधनों की कमी उसके सामाजिक सम्मान और सुरक्षा के प्रश्न में बदल जाती है। सामाजिक शक्ति स्थान को व्यवस्थित करती है और स्थान की व्यवस्था सामाजिक शक्ति को पुनः मजबूत करती है। परिवेश और पात्रों का मनोविज्ञान: रांगेय राघव के पात्रों का मनोविज्ञान सामाजिक और स्थानिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है। सुखराम की आकांक्षा उस सामाजिक दुनिया से अलग नहीं है जिसमें सम्मान असमान रूप से वितरित है। गदल के निर्णयों को समझने के लिए उसके आत्मसम्मान और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच तनाव को भी देखना होगा। व्यक्ति स्थान को अनुभव करता है, उसका अर्थ ग्रहण करता है और कई बार उसी अर्थ को बदलने की कोशिश करता है।

भू-काव्यशास्त्रीय पुनर्पाठ का महत्व: रांगेय राघव के साहित्य का भू-काव्यशास्त्रीय पुनर्पाठ इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि स्थान किस तरह कथा में संवेदना, स्मृति और सामाजिक संबंधों को आकार देता है। कब तक पुकारूँ में करनटों का निवास केवल भौगोलिक स्थिति नहीं है, बल्कि सामाजिक पहचान और असुरक्षा से बना हुआ स्थान है। ‘गदल’ में घर भौतिक निवास से बढ़कर मर्यादा और नियंत्रण की संरचना है। पात्र अपने परिवेश से प्रभावित होते हैं, लेकिन वे उसी परिवेश की व्याख्या भी करते हैं।

चर्चा: दोनों रचनाओं को साथ रखकर देखने पर तीन परस्पर जुड़े स्तर सामने आते हैं: भौतिक स्तर (भूमि, निवास), सामाजिक स्तर (सम्मान, बहिष्कार, मर्यादा) और मनोवैज्ञानिक स्तर (असुरक्षा, आकांक्षा)। कब तक पुकारूँ में ये स्तर सामुदायिक जीवन के माध्यम से जुड़ते हैं, जबकि ‘गदल’ में यही प्रश्न घरेलू और लैंगिक स्थान के स्तर पर सामने आता है। सामाजिक संरचनाएँ स्थान को अर्थ देती हैं और मनुष्य अपने अनुभव से उस अर्थ को

पुनः निर्मित करते हैं। भू-काव्यशास्त्र, लेफेब्वर का सिद्धांत और पारिस्थितिक स्त्रीवाद इन रचनाओं को विश्लेषित करने में सहायक हैं, किंतु इनमें से कोई भी सिद्धांत रांगेय राघव की रचनाओं का एकमात्र अर्थ निर्धारित नहीं करता।

निष्कर्ष

रांगेय राघव के कथा-साहित्य का स्थानिक पुनर्पाठ यह स्पष्ट करता है कि उनके यहाँ भूगोल निष्क्रिय दृश्य नहीं है। स्थान सामाजिक संबंधों, संसाधन-वितरण, निवास, सम्मान और मनोवैज्ञानिक अनुभवों के साथ निर्मित होता है। कब तक पुकारूँ में करनट समुदाय की अस्थिरता और ‘गदल’ में घर और स्त्री की इच्छा का संबंध बताता है कि निजी स्थान भी सामाजिक सत्ता का क्षेत्र हो सकता है। संसाधनों का असमान वितरण स्थानिक असमानता को जन्म देता है, जबकि स्थान की असमान संरचना सामाजिक सत्ता को मजबूत करती है।

साथ ही, पात्र अपने परिवेश के निष्क्रिय उत्पाद नहीं हैं। वे निर्णय लेते हैं, संघर्ष करते हैं, संबंधों को पुनर्व्यवस्थित करते हैं और स्थापित मर्यादाओं को चुनौती देते हैं। रांगेय राघव की रचनाओं में स्थान, भूमि, निवास, संसाधन, सामाजिक सत्ता और स्त्री-अनुभव की जटिल संरचना भू-काव्यशास्त्रीय तथा पारिस्थितिक आलोचना के साथ सार्थक संवाद स्थापित करती है, जिससे उनके साहित्य की सामाजिकता और स्थानिकता को नए सिरे से समझने की संभावना खुलती है।

संदर्भ सूची

1. राघव आर. कब तक पुकारूँ. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1957.
2. खीचड़ आर पी. ‘कब तक पुकारूँ’ उपन्यास रु लोकसंघर्ष का सजीव दस्तावेज. अपनी माटी, अंक 41, 2021, पृष्ठ 1-8.
3. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग. ज्ञानगरिमा सिंधु. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, अंक 69, 2021.
4. राघव आर. गदल. रांगेय राघव की चुनी हुई कहानियाँ, राजपाल एंड संस, 2005.
5. राघव आर. 10 प्रतिनिधि कहानियाँ. किताबघर प्रकाशन, 2006.
6. व्हाइट के. द वांडरर एंड हिज चाटर्स एक्सप्लोरिंग द फील्ड्स ऑफ वैग्रेट थॉट एंड वैगाबॉन्ड ब्यूटी. पॉलीगॉन, 2004.
7. लेफेब्वर एच. द प्रोडक्शन ऑफ स्पेस (अनुवादक: डोनाल्ड निकोलसन-स्मिथ). ब्लैकवेल, 1991.
8. फूको एम. ऑफ अदर स्पेसेसर हेटरोटोपियाज. आर्किटेक्चर/मूवमेंट/कंटिन्यूटी, वॉल्यूम 1, अंक 5, 1984, पृष्ठ 46-49.
9. शिवा वी. स्टेइंग अलाइवरु विमेन, इकोलॉजी एंड डेवलपमेंट. जेड बुक्स, 1988.